इकाई 2 अष्टोत्तरी दशा साधन

पाठ संरचना

2.0 उद्देश्य

2..1 प्रस्तावना

2..2 अष्टोत्तरी दशा के अर्थ एवं भेद

2.3.1 अष्टोत्तरी दशा विचार

2.3.2 अष्टोत्तरी दशा के बारे में कुछ जानकारी

2.3.3 अष्टोत्तरी दशा के नियम

2.4 दशा के भुक्त–भोग्य साधन

2.4.1 अन्तर्दशा का आनयन

2.4.2 अभिजित् दशा साधन विचार

2.5 सांराश

2.6 शब्दावली

2.7 उपयोगी पुस्तकें

2.8 बोध

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपलोग निम्नलिखित विषयों को पूर्णतया अध्ययन कर पायेगें।

- अष्टोत्तरी दशा के अर्थ एवं भेद को निरूपित कर सकेंगे।
- अष्टोत्तरी महादशा का स्वरूप बता सकेंगे।
- अष्टोत्तरी महादशा का भुक्त–भोग्य निकाल पायेगें।
- अष्टोत्तरी महादशा चक्र बना सकेंगे।
- अष्टोत्तरी महादशा के अन्तर्गत अन्तर्दशा के साधन का वर्णन कर सकेंगे।
- अभिजित् नक्षत्र दशा का भी विचार करेंगें।

2.1 प्रस्तावना

पिछले अध्याय से आपने यह जाना कि दशा ही ऐसा मार्ग है जिससे कि कुण्डली के फल प्राप्ति के काल का आकलन समय के अनुसार किया जा सकता है। जैसे :– लग्नेश जिस राशि में स्थित हो, उसके स्वामी के नवमांश में या मित्र के नवमांश में या मित्र ग्रह से देखा जाता हो या मित्र के द्रेष्काण पति के नवमांश में यदि ग्रह गया हुआ हो तो उसकी दशा शुभफल प्रदान करने वाली होती है। साथ ही पंचम भाव के नवमांश में या पंचम भाव के द्वादशांश में मित्र के द्रेष्काण में भी स्थित जो ग्रह होता है, उसकी अन्तर्दशा शुभफल देने वाली होती है।

इन सभी विषयों को आप लोग दशा एवं कुण्डली में स्थित षड्वर्ग के अनुसार जान सकते है। आइए अब अशुभ फलों को जानते हैं परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि अष्टमेश, षष्ठेश, और व्ययेश, इनकी दशा कष्ट देने वाली होती है। जैसे :– यदि मारकेश से युक्त षष्ठेश तथा लग्नेश हो तो उसकी दशा में ज्वर होता है। यदि षष्ठेश से युक्त लग्नेश बुध के षड्वर्ग में स्थित हो तो उसकी दशा में वायु विकार (गैस सम्बन्धित बिमारी)अथवा शरीर को दुर्बल करने वाला वात रोग होता है। इस प्रकार बहुत सारे योग फल को आप लोग दशा के अनुसार समझ सकते हैं। अपितु यहां पर आप लोगों को केवल अष्टोत्तरीमहादशा के बनाने की विधि को ही बताया गया है। ताकि आप लोग यह जान सकें कि उपरोक्त शुभाशुभ फलों की प्राप्ति कब होगी। इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप लोग भली –भांति अष्टोत्तरीमहादशा का साधन कर पायेगें।

अब आइए अष्टोत्तरीदशा के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, चूंकि दक्षिण भारत में अष्टोत्तरी दशा का विशेष प्रचार है तथा आप लोगों को पिछली इकाई अर्थात इकाई न.–1 विंशोत्तरीदशा साधन में इस बात पर चर्चा की गयी है, कि जिसका जन्म शुक्लपक्ष में हो उसका अष्टोत्तरीदशा द्वारा और जिसका जन्म कृष्णपक्ष में उसका विंशोत्तरी दशा द्वारा शुभाशुभ फल जानना चाहिए। दशा द्वारा हमें किसी भी व्यक्ति के शुभाशुभ समय का ज्ञान होता है ।

2.2 अष्टोत्तरी दशा के अर्थ एवं भेद

अष्टोत्तरीदशा की सम्पूर्ण आयु 108 वर्ष ही होती है, इसलिए इसे अष्टोत्तरी महादशा कहते है। अष्टोत्तरीदशा के दो भेद हैं आर्द्रादि एवं कृतिकादि ।

1) यदि जन्मकुण्डली में लग्न में कोई भी ग्रह न हो तो दशा की गणना कृतिका से करनी चाहिए।

2) यदि राहु लग्नेश से केन्द्र में और शुक्र लग्न में हो तो अष्टोत्तरी दशाग्रहण करनी चाहिए।

यथा :–

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे तथा निशि ।

तदा ह्यष्टोत्तरी चिन्त्या फलार्थंश्च विशेषतः ।।

(बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम, दशाध्याय श्लोक सं.23)

2.3.1 अष्टोत्तरी दशा विचार

अष्टोत्तरी दशा के बारे मे ‘‘ बृहत्पाराशरहोराशास्त्र ’’ में इस प्रकार का मत दिया है। यदि लग्नेश से राहु लग्न को छोड़कर अन्य स्थानों, अर्थात केन्द्र – त्रिकोणस्थान में बैठे हों तो अष्टोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिए। ऐसा कुछ आचार्य लोगों का मत है।

अष्टोत्तरी दशा (108 वर्ष की) दशा में सूर्यदशावर्ष 6 वर्ष, चन्द्रमा 15 वर्ष, भौम दशा 8 वर्ष, बुध दशा वर्ष 17 वर्ष, शनि दशा 10 वर्ष, गुरु दशा 19 वर्ष, राहु दशा 12 वर्ष, और शुक्र दशा 21 वर्ष होती है।

अष्टोत्तरी दशाक्रम में आर्द्रा नक्षत्र से चार नक्षत्रों के स्वामी सूर्य हैं। इसके बाद के तीन नक्षत्र का स्वामी चन्द्र, इसके बाद चार नक्षत्र तक मंगल, इसके बाद तीन नक्षत्र तक बुध, पुन : इसके बाद चार नक्षत्र तक शनि, इसके बाद तीन नक्षत्र तक गुरु, पुनः इसके बाद चार नक्षत्र तक राहु, इसके बाद तीन नक्षत्र तक शुक्र का आधिपत्य है।

इस प्रकार गिनकर अपना नक्षत्र जिस ग्रह में आवे वही प्रारम्भ कालिक उस ग्रह की ही जन्म दशा होगी। यहां पर इस बात पर विशेष ध्यान रखना है कि अष्टोत्तरी महा दशा में केतु को छोड़कर अन्य आठ ग्रह ही दशा के स्वामी होते हैं ।

जन्म नक्षत्र से दशा ज्ञान करने की एक यह भी विधि है कि अभिजित सहित आर्द्रादि नक्षत्रों को पाप ग्रहों में चार – चार और शुभग्रहों में तीन – तीन स्थापित करने से ग्रह दशा मालूम पड़ जाती है। सरलता से जानकारी करने के लिए चक्र देखिए।

।। जन्म नक्षत्र से अष्टोत्तरी दशा ज्ञात करने का चक्र।।

दशा स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा	मघा	हस्त	अनुराधा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	उत्तरा भाद्रपद	कृतिका
जन्म नक्षत्र	पुनर्वसु	पूर्वा फाल्गुनी	चित्रा	ज्येष्ठा	उतराषाढा	शतभिषा	रेवती	रोहिणी
जन्म नक्षत्र	पुष्य	उतरा फाल्गुनी	स्वाती	मूल	अभिजित्	पूर्वा भाद्रपद	अश्विनी	मृगशिरा
जन्म नक्षत्र	आश्लेषा	–	विशाखा	–	श्रवण	–	भरणी	–
दशा वर्ष	6	15	8	17	10	19	12	21
दशा मास	72	180	96	204	120	228	144	252

2.3.2 अष्टोत्तरी दशा के बारे मे कुछ जानकारी

इस दशा की पद्धति में परमायु 108 वर्ष मानी जाती है। इसका क्रम विंशोत्तरी दशा से भिन्न है। इसमें दशेश का क्रम इस प्रकार है– सूर्य, चन्द्र मंगल, बुध, शनि, राहु, और शुक्र इन आठ ग्रहों को दशेश के क्रम में रखा गया है। इसमें केतु को ग्रहण नही किया गया है। इन आठ दशेशों के दशा चक्र में बताया गया है।

इस दशा पद्वति में भी दो प्रकार के नक्षत्र क्रम प्राप्त होते हैं (1) आर्द्रादि और (2) कृतिकादि परन्तु यहां पर आर्द्रादि क्रम अधिक प्रचलित है तथा कृतिकादि क्रम प्रचलन में कम पाया जाता है। साथ ही इस बात को पहले भी बताया गया है, यदि लग्न में कोई ग्रह स्थित होतो आर्द्रादि और ग्रह न रहे तो कृतिकादि क्रम ग्रहण करना चाहिए। यहां ध्यानार्थ है कि पाराशर महर्षि ने केवल आर्द्रादि नक्षत्र क्रम का उल्लेख किया है। लगता है कि इसी से प्रायः व्यवहार मे भी लोग इसे ही अपनाते हैं।

महर्षि पराशर ने आर्द्रा से चार नक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा) सूर्य के इसके बाद तीन नक्षत्र (मघा पूर्वा फाल्गुनी, उतराफाल्गुनी) चन्द्र के, फिर चार नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा) मंगल के पुनः तीन नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद) गुरु के (उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी), राहु के पुनः तीन नक्षत्र (कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा) शुक्र के कहे हैं जिसमें अभिजीत भी शामिल किया गया है। इस प्रकार कुल 28 नक्षत्र हो जाते हैं।

इस प्रकार आर्द्रा नक्षत्र से जातक के जन्म नक्षत्र तक गिनकर जिस किसी ग्रह की दशा प्राप्त हो, वही से दशा का प्रारम्भ मानकर दशा साधन करना चाहिए।

2.3.3 अष्टोत्तरी दशा के नियम

विंशोत्तरी से भिन्न यहां पर नक्षत्रों के दशा वर्ष या मास बताये गये हैं। जैसे सूर्य का महादशा वर्ष 6 है। इसके नक्षत्र हैं– आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, प्रत्येक नक्षत्र को दशा वर्ष का समान भाग मिला हुआ है। इस प्रकार 6÷4= 1 वर्ष 6 मास या 18 मास प्रत्येक नक्षत्र की दशा होगी। जिस के तीन नक्षत्र है, वहां उस ग्रह के दशा वर्ष में 3से भाग देकर नक्षत्रों का हिस्सा (भाग या अंश) वर्ष या मास में ज्ञात कर लेते हैं। जैसे :– चन्द्र को तीन मघा, पूर्वा फाल्गुनी, और उमराफाल्गुनी मिला हुआ है, उसका दशा वर्षादि है 15 वर्ष, इसमें 3 का भाग दिये तो एक भाग 5 वर्ष का या 60 मास का हुआ। अतः तीनो नक्षत्रों को 60–60 मास मिलेगा। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिए ।

भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणा करके भभोग के पलों का भाग देने से विंशोत्तरी के समान भुक्त वर्षादि मान आता है। इसे ग्रह वर्षों में से घटाने से भोग्य वर्षादि निकलता है ।

अब आइए मूल रूप से अष्टोत्तरी महा दशा बनाने के नियम उदाहरण के माध्यम से समझते हैं।

2.4 दशा का भुक्त भोग्य साधन के नियम

गत नक्षत्र के घटी –पल को 60/00 में से घटाकर अन्तर में जन्मकालिक इष्ट घटी –पल जोड़ने से भयात होता है तथा 60/00 में सें घटाये गये घटी –पल में जन्म नक्षत्र के घटी –पल जोडने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटीयों को पल बना लेवें, भयात वर्तमानदिनके से प्राप्त पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भभोग के पलों से भाग देवें, लब्धांक वर्ष होगा। फिर शेषांक को 12 से गुणाकर भभोग के पलों से भाग देवे, लब्धांक मास होगा। फिर शेषांक को 30 से गुणाकर, एवं भभोग के पलों से भाग देने पर लब्धांक दिन होगा। फिर शेषांक को 60/00 से गुणाकर एवं भभोग के पलों से भाग देने पर लब्धांक घटी एवं शेष पल प्राप्त होगें। वह इस दशा का वर्षदि भुक्तकाल होगा। इसे महादशा के वर्षें में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होता है। अब आइए इन सभी विषयों को उदाहरण के अनुसार समझते हैं।

विक्रम संवत 2077 शाके 1942 वसन्त ऋतु रवि उत्तरायण तथा दक्षिण गोल, षष्ठी तिथि शुक्रवार 55/3 तिथिमान घटी, पल में है। अतः नक्षत्र, योग, करण, एवं दिनमान, इष्टकाल, भभात, भभोग के मान को भी घटी, पल मे जानना चाहिए। एवं लग्न स्पष्ट, ग्रह स्पष्ट को राशि, अंश कला, विकला में स्पष्ट करके दिया गया है। वर्तमान नक्षत्र कृतिका इसका मान हैं। 17/20 गत नक्षत्र भरणी है इसका मान है 09/23, कौलव करण मान 21/43 दिनमान 29/55, सूर्योदय प्रातः 06 बजकर 47 मिनिट, वृष राशि चन्द्र मीन राशि स्थित सूर्य, तदनासुार अंग्रेजी तारीख 19 मार्च 2021 दिन शुक्रवार को जातक का जन्म हुआ है दिन मे 10 बजकार 22 मिनिट पर अतः इस समय का विंशोत्तरी दशा बनाने के लिए इष्टकाल, भयात, भभोग, ग्रह स्पष्ट व लग्न स्पष्ट बनाकर दशा साधन किया जायेगा।

इष्टकाल का अर्थ सूर्योदय से जन्म समय तक की घट्यात्मक मान इष्टकाल होता है।

इष्टकाल बनाने की विधि :–जब भी इष्टकाल बनाना हो तो जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढ़ाई गुना कर देने से इष्टकाल हो जाता है। परन्तु दिन में 12 बजे

के बाद एक आदि वजने को 13 आदि गणना करनी चाहिए तथा रात्रि में बारह बजने पर 24 आदि गणना करना चाहिए ।

उदाहरण :– 10:22 जन्म समय

– 06:47 सुर्योदय घटाया

———————————————

= 03:35 घंटा मिनिट फल प्राप्त हुआ ।

अतः इसको ढाई गुना किया 03:35 X 5/2=15/2 175/2= 08 घटी 57 पल 30 विपल इष्टकाल प्राप्त हुआ ।

भयात – भ=नक्षत्र, यात = बीता हुआ, अर्थात बिते हुए नक्षत्र के मान का नाम भयात होता है ।

भयात बनाने के नियम :– 60 घटी में से गत नक्षत्र के मान घटाकर शेष फल में इष्टकाल को जोड़ देने से भयात हो जाता है।

उदाहरणः– 60/00 नियमानुसार

– 09/23 गत नक्षत्र भरणी के मान को घटाया

———————————————

50। 37 घटी पल फल आया

+ 08। 57। 30 इष्टकाल घटी, पल, विपल जोड़ा

———————————————

59/34/30 भयात, घटी पल विपल प्राप्त हुआ।

भभोग = नक्षत्र के सम्पूर्ण मान का नाम भभोग होता है।

भभोग साधन = 60। 00 नियमानुसार

– 09। 23 गत नक्षत्र के मान को घटाया

———————————————

50। 37 पल आया

+ 17। 20 वर्तमान नक्षत्र कृतिका के मान को जोड़ा

———————————————

67। 57 घटी पल भभोग हुआ

।। **सूर्यादि स्पष्ट ग्रह ।।**

———————————————

सूर्यः–11/04/39/36 गति 59/32

चन्द्र :– 01/08/20/50 गति 744/7

भौम :–01/14/40/38 गति 35/42

बुध :– 10/10/19/58 गति 60/26

गुरु :–09/26/28/13 गति 12/24

शुक्र :–11/02/52/23 गति 74/42 अस्त

शनि :–09/16/08/12 गति 05/18

राहु :– 01/20/37/16 गति 03/11 वक्री

केतु :– 07/20/37/16 गति 03/11 वक्री

स्पष्ट लग्न :– 01/11/49/47

|| जन्म कुण्डली ||

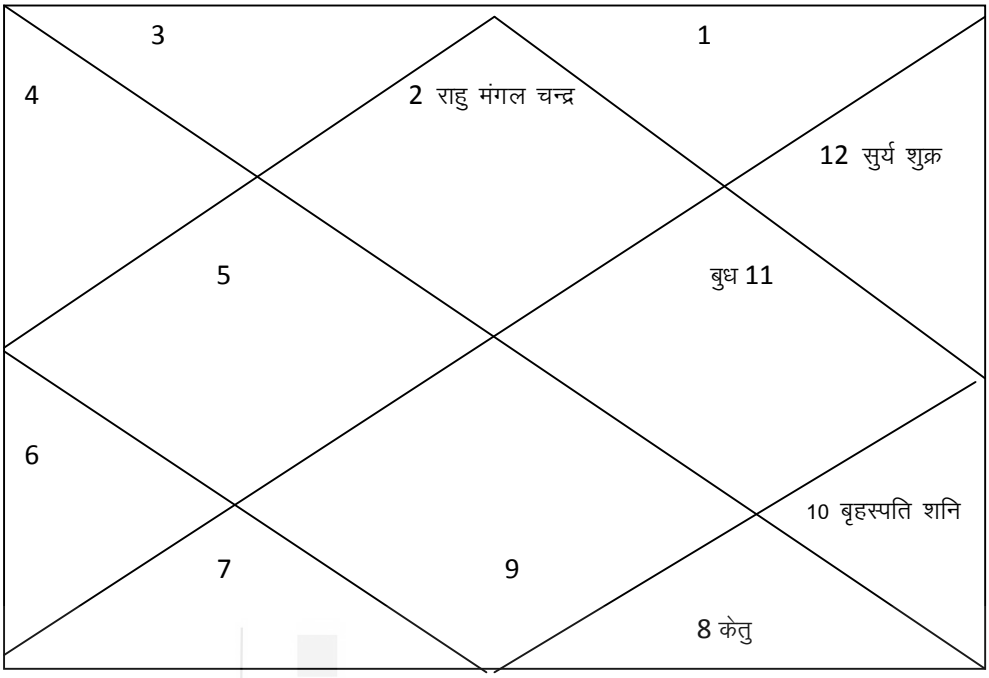

अब वर्तमान उदाहरण के अनुसार अष्टोत्तरी दशा साधन किया जायेगा। यहां पर भयात है– 59 / 34

भयात (59) × 60 = 3540 + 34

= 3574 पलात्मक भभोग

भभोग 67 । 57

× 60 + 57 = 4077 पलात्मक भभोग ।

अब नियमानुसार अष्टोत्तरी महादशा बनाने के लिए पलात्मक भयात में शुक्र दशा वर्ष 21 से गुणा करेगें। तथा अन्तर्दशा की चर्चा बाद में करेगें।

पलात्मक भयात 3574

× 21

75054 फल आया इसमें पलात्मक भभोग से भाग दिया ।

75054 ÷4077= 18 वर्ष आया। तथा शेष बचा 1668 इसमें नियमानुसार 12 का गुणा किया 1668

12 = 20016 इसमें पलात्मक भभोग से भाग दिया तो भागफल आया 20016÷4077 = 4 मास आया ।

शेषफल 3708 मे नियमानुसार 30 से गुणा किया। 3708×30=111240 आया इसमें पलात्मक भभोग से भाग दिया 111240 ÷ 4077 = 27 दिन आया शेषफल बचा

1161 × 60 = 69660 इसमें पलात्मक भभोग से भाग दिया तो 69660 ÷ 4077 =17 घटी यह पल आया तथा शेषफल 351× 60 =21060 पलात्मक भभोग से भाग दिया तो भागफल आया 17 पल,

शेषफल को त्याग दिया। अब इस भुक्त वर्षादि कों शुक्र अष्टोंत्तरी महादशा वर्ष में से घटाने पर भोग्य दशा वर्ष आयेगा।

अब इस भुक्त वर्षादि को शुक्र अष्टोत्तरी महादशा वर्ष मे से घटाने पर भोग्य दशा वर्ष आयेगा।

21 / 00 / 00 / 00 / 00 शुक्र अष्टोत्तरी दशा वर्ष में से
– 18 / 04 / 27 / 17 / 05 भुक्त दशा वर्ष घटाया

02 / 07 / / 02 / 42 / 55 भोग्य दशा प्राप्त हुआ (शुक्र का)

अब अष्टोत्तरी महादशा चक्र कुण्डली में बनाने के लिए वर्तमान उदाहरण के अनुसार किसी जातक का जन्म 19 मार्च 2021 को हुआ है। तथा इस दिन का स्पष्ट सूर्य है।

11 / 04° / 39′ / 36′′ तथा विक्रम संवत् है। 2077 अब इसमें भोग्य वर्षादि को जोडने से भोग्य संवत्

आयेगा तथा अग्रेजी तारीख मास दिन मे भी भोग्य वर्षादि जोडने से भोग्य तारीख मास ईसवीय सन् आयेगी।

जैसे :–

2021 / 03 / 19 ईसवीय सन् मास तारीख मे भोग्य वर्षादि
+ 2 / 07 / 02 को जोड़ा

2023 / 10 / 21 ईसवीय सन् मास तारीख भोग्य हुआ ।
अब संवत् के अनुसार भी इसी प्रकार बनायेगें।
जन्म संवत् सूर्य राश्यादि में भोग्य वर्षादि जोड़ा तो
2077 / 11 / 04 / 29 / 36
+ 02 / 07 / 02 / 42 / 55 भोग्य वर्षादि जोड़ा

2080 / 06 / 07 / 22 / 31 भोग्य संवत् सूर्य राश्यादि प्राप्त हुआ। अब इसी के अनुसार कुण्डली में अष्टोंत्तरी दशा चक्र बनायेगें। नीचे अष्टोत्तरी महादशा चक्र का निर्माण किया जा रहा है जिससे आप लोगों इसकी पूर्णतया जानकारी हो जायेगी। आइए अब चक्र का निर्माण करतें हैं।

।। अष्टोत्तरीय महादशा चक्र।।

ग्रहा :	शुक्र भुक्त	शुक्र भोग्य	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
वर्ष	18	2	6	15	8	17	10	19	12
मास	4	7	0	0	0	0	0	0	0
दिन	27	2	0	0	0	0	0	0	0
घटी	17	42	0	0	0	0	0	0	0
पल	5	55	0	0	0	0	0	0	0
संवत्	2077	2080	2086	2101	2109	2126	2136	2155	2167
सूर्य राशि	11	6	6	6	6	6	6	6	6
सूर्य अंश	4	7	7	7	7	7	7	7	7

सूर्य कला	39	22	22	22	22	22	22	22	22
विकला	36	31	31	31	31	31	31	31	31
अंग्रेजी तारीख मास	19 मार्च	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर	21 अक्टूबर
ईस्वीय सन्	2021	2023	2029	2044	2052	2069	2079	2098	2110

अब आइए समझते है अष्टोत्तरी अन्तर्दशा के बारे में कि केसे बनाया जाता हैं ।

2.4.1 अष्टोत्तरी दशा में अन्तर्दशा का आनयन

1) :– विंशोत्तरी दशा एवं अन्तर्दशा में दशा वर्ष का गुणा करके 10 से भाग देते है। लेकिन यहां 9 से भाग देकर अन्तर्दशा मासादि होता है ।

जैसे :– उदाहरण के अनुसार बृहस्पति की अन्तर्दशा लाना है तो दशा दशा ÷ 9

19 × 19 ÷ 9 = 361

361 ÷ 9 = 40 लब्धि आया शेष बचा 1 इसमें 30 का गुणा किया नियमानुसार तो 30 ही हुआ। इसमें 9 का भाग दिया तो 3 लब्धि आती है और शेष बचा 3। इसमें नियमानुसार 60 का गुणा किया तो 180 हुआ तथा इसमें 9 का भाग दिया तो लब्धि 20 आई यह मास आदि फल आया। इसको वर्षादि में परिवर्तित किया तो आया 3 वर्ष 4 मास, 3दिन, 20 घटी 0 पल आया। यह बृहस्पति में बृहस्पति का अन्तर हुआ अर्थात बृहस्पति में बृहस्पति की अन्तर्दशा तीन वर्ष, चार मास, तीन दिन और 20 घटी होती है ।(2) :– दशा वर्ष में दशा वर्ष का गुणाकर परमायु से भाग देने पर भागफल वर्षादि मिलते है। जिसे ग्रहों में ग्रहों की अन्तर्दशा कहते हैं।

जैसे :–बृहस्पति महादशा में शनि की अन्तर्दशा लाना है ।

अतः 19×10 ÷ 108 = 1 वर्ष, 9 मास, 3 दिन 20 घटी हुआ। यही बृहस्पति में शनि की अन्तर्दशा = 1/9/3/20 वर्षादि हुई ।

अष्टोत्तरी में दशा एवं अन्तर्दशा का लेखन विशोत्तरी दशा की तरह ही करना चाहिए। यहां पर उदाहरण के अनुसार अष्टोत्तरी अन्तर्दशा दशा चक्र का निर्माण किया जा रहा है जिसको देखकर आप लोग आसानी से जन्मकुण्डली में अन्तर्दशा चक्र बना सकत हैं।

।। अष्टोत्तरी अन्तर्दशा चक्र।।

ग्रहा :	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
वर्ष	4	1	2	1	3	1	3	2
मास	1	2	11	6	3	11	8	4
दिन	0	0	0	20	20	10	10	0
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0
पल	0	0	0	0	0	0	0	0
संवत्	–	–	–	–	–	–	2078	2080
सूर्य राशि	–	–	–	–	–	–	2	6

सूर्य अंश	–	–	–	–	–	–	7	7
सूर्य कला	–	–	–	–	–	–	22	22
विकला	–	–	–	–	–	–	31	31
अंग्रेजी तारीख	–	–	–	–	–	–	21	21
मास	–	–	–	–	–	–	जून	अक्टूबर
ईस्वीय सन्	–	–	–	–	–	–	2021	2023

अब इसके बाद आप लोगों को अष्टोत्तरी महादशा के अन्तर्गत अन्तर्दशा चक्र नियमानुसार बनाकर दिखावा जायेगा ताकि आप लोगों को किसी प्रकार न हो।

।। अष्टोत्तरी सूर्य महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र सूर्य दशा वर्ष 6 ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
सूर्य	0	4	0	0
चन्द्र	0	10	0	0
भौम	0	5	10	0
बुध	0	11	10	0
शनि	0	6	20	0
गुरु	1	0	20	0
श्राहु	0	8	0	0
शुक्र	1	2	0	0

।। अष्टोत्तरी चन्द्र महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र चन्द्र दशा वर्ष 15 ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
चन्द्र	2	1	0	0
भौम	1	1	10	0
बुध	2	4	10	0
शनि	2	7	20	0
गुरु	1	7	0	0
श्राहु	1	8	0	0
शुक्र	2	11	0	0
सूर्य	0	10	0	0

अष्टोत्तरी मंगल महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र मंगल दशा वर्ष 8 वर्ष।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
मंगल	0	7	3	20
बुध	1	3	3	20
शनि	0	8	26	40
गुरु	1	4	26	40
राहु	0	10	20	0
शुक्र	1	6	20	0

सूर्य	0	5	10	0
चन्द्र	1	1	10	0

।। अष्टोत्तरी बुध महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र बुध दशा वर्ष 17 वर्ष ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
बुध	2	8	3	20
शनि	1	6	26	40
गुरु	2	11	26	40
राहु	1	10	20	0
शुक्र	3	3	20	0
सूर्य	0	11	10	0
चन्द्र	2	4	10	0
मंगल	1	3	3	20

।। अष्टोत्तरी शनि महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र शनि दशा वर्ष 10 वर्ष ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
शनि	0	11	3	20
गुरु	1	9	3	20
राहु	1	1	10	0
शुक्र	0	11	10	0
सूर्य	0	6	20	0
चन्द्र	1	4	20	0
मंगल	0	8	26	40
बुध	1	6	26	40

।। अष्टोत्तरी बृहस्पति महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र बृहस्पति दशा वर्ष 19 वर्ष ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
बृहस्पति	3	4	3	20
राहु	2	1	10	0
शुक्र	3	8	10	0
सूर्य	1	0	20	0
चन्द्र	2	7	20	0
मंगल	1	4	26	40
बुध	2	11	26	40
शनि	1	9	3	20

।। अष्टोत्तरी राहु महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र राहु दशा वर्ष 12 वर्ष ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
राहु	1	4	0	0
शुक्र	2	4	0	0
सूर्य	0	8	0	0
चन्द्र	1	8	0	0
मंगल	0	10	20	0
बुध	1	10	20	0
शनि	1	1	10	0
बृहस्पति	2	1	10	0

।। अष्टोत्तरी शुक्र महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चक्र शुक्र दशा वर्ष 21 वर्ष ।।

ग्रहा :	वर्ष	मास	दिन	घटी
शुक्र	4	1	0	0
सूर्य	1	2	0	0
चन्द्र	2	11	0	0
मंगल	1	6	20	0
बुध	3	3	20	0
शनि	1	11	10	0
बृहस्पति	3	8	10	0
राहु	2	4	0	0

इस प्रकार आप लोग उपरोक्त तालिका के अनुसार बहुत ही आसानी से अष्टोत्तरी महादशा के अन्तर्गत अन्तर्दशा बना सकते हैं। तथा इसका उदाहरण पहले ही आप लोगों को बताया जा चुका है। अब इसके बाद अभिजित् नक्षत्र के अनुसार अभिजित् दशा साधन के बारे में बताया जायेगा ।

2.4.2 अभिजित् दशा साधन विचार

दशाओं में प्रमुख विशोत्तरी या प्रायः अन्यत्र भी 27 नक्षत्र ही मानकर दशा साधन किया गया है ।प्रायः अष्टोत्तरी और षष्टिहायनी दशा में अभिजित सहित नक्षत्रों की गणना की जाती है। अष्टोत्तरी शनि की महादशा में आर्द्रादि साभिजित नक्षत्र गणना क्रम से चार नक्षत्र (पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, अभिजित् और श्रवण)माने गये हैं। इनमें अभिजित् का मान अन्य नक्षत्रों की अपेक्षा भिन्न है ।एवं उत्तराषाढ नक्षत्र की "मुहूर्त चिंतामणि " के वचन के अनुसार उत्तराषाढा की अन्तिम 15 घटी तथा श्रवण की आदि की 4 घटी मिलाकर 19 घटी अभिजित् का भोगमान होता है। परन्तु यह मान नक्षत्रों का मध्यम भोग 60 घटी मानकर लाया गया है। यदि उसका स्पष्ट भोगकाल, न्यूनाधिक होगा, तो उतनी ही अनुपात से अभिजित् का भी भोगकाल न्यूनाधिक माना जायेगा। अतः इसी कारण अष्टोत्तरीदशा साधन में इसका साधन अलग प्रकार से करने में सहजता व सरलता रहती है।

शनि की महादशा में पूर्वाषाढा नक्षत्र की दशा का साधन पुर्वोक्त साधन रीति से ही करना चाहिए। शेष उत्तराषाढा, अभिजित् व श्रवण की दशा का साधन इस प्रकार करने में सरलता व सहजता रहेगी। यहां पर नक्षत्रों का भोगमान न्यूनाधिक होने पर भी दशा वर्षादि का मान समान ही रहते हैं।अर्थात प्रत्येक नक्षत्र की दशा का मान 2 वर्ष 6 मास, यानि अढाई वर्ष ही रहेगा ।दशा साधन करते समय जन्म के स्पष्ट चन्द्र को देखकर, किसकी महादशा में जन्म है, यह समझ लेना चाहिए। जैसे कि तात्कालिक स्पष्ट चन्द्र यदि 8/26/40 से अधिक तथा 9/6/40/0 से कम हों तो उत्तराषाढा की दशा होगी ।यहां जन्मकालिक चन्द्र 9/6/40/0 से अधिक 9/10/53/20 से कम हो, तो अभिजित् की दशा होगी एवं 9/10/53/20 से अधिक तथा 9/23/20/0 कम चन्द्र के होने पर श्रवण की दशा होगी ।

दशा का निर्णय करके जन्म के चन्द्र में गत नक्षत्र के चन्द्र को घटाने से वर्तमान चन्द्र में नक्षत्र का राश्यादि शेष रहेगा ।

इसे और स्पष्ट करते है, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, कि उत्तराषाढा नक्षत्र की अन्तिम 15 घटी और श्रवण के आरम्भ की 4 घटी मिलाकर अभिजित नक्षत्र होता है ।यहां 15 घटी सम्पूर्ण नक्षत्र भोगमान 60 घटी का चतुर्थांश है, एक नक्षत्र का अंशात्मक योग 13•। 20 का होता है, इसका चतुर्थांश 3 अंश 20 कला भोग नक्षत्र के पाद 15 घटी के प्रायः समतुल्य माना जाता है ।

इसी प्रकार 4 घटी नक्षत्र के सम्पूर्ण भोगकाल 60 का 15वां भाग है। अतः 4 घटी =13 अंश 20 कला ÷ 15 = 0•। 53′। 20′′ होगा। इस प्रकार अभिजित का सम्पूर्ण मान 3•।20′। + 0•। 53′। 20′′=4•।13º।20′′ होगा।

वहां उत्तराषाढा के अन्त के 4 घटी =13•।20′ ÷ 15 =0•। 53′। 20′′=4•।13′।20′′ होगा ।अब यहां पर उत्तराषाढ के 3•।20′ को घटा देने से उत्तराषाढ का सम्पूर्ण मान 13•।20′–3•।20′′ = 10•का ही होगा। 8 राशि /26º/40′/0′′ से उत्तराषाढा नक्षत्र का आरम्भ होता है ।

उत्तराषाढा के उक्त सम्पूर्ण मान 10 अंश को इसमे संयुक्त करने पर 8 राशि 26º/40′/0′′ +10º =9 राशि /6º/40′/0′′ उत्तराषाढ नक्षत्र का अन्त बिन्दू होगा। इस चक्र में राश्यादि 8/26º/40/0से राश्यादि 9/6/40/0 तक उत्तराषाढ का विस्तार क्षेत्र होगा इस प्रकार इसको समझने के लिए चक्र बनाया जा रहा है। जिससे कि आप लोग भली–भॉति समझ सके, तथा इसका साङ्गोपाङ्ग ज्ञान ले सकें।

।। शनि दशा में अभिजित् ज्ञान तालिका ।।

नक्षत्र	पू.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण
दशा स्वामी	शनि	शनि	शनि	शनि
चन्द्र राशि	8	9	9	9
चन्द्र अंश	26	6	10	23
चन्द्र कला	40	40	53	20
चन्द्र विकला	0	0	20	0
नक्षत्र भोग कलादि	800′/0	600′/0	253′/20′	746′/40′
दशा वर्ष शनि दशा वर्ष 10	2.5	2.5	2.5	2.5
दशा मास	30	30	30	30

शनि दशा के नक्षत्रों में अभिजित् तीसरा नक्षत्र है। चन्द्रमा के राश्यादि भोग में उत्तराषाढा के राश्यादि मान को घटाने से शेष चन्द्र का भुक्त भाग होगा। चन्द्रमा के उक्त भाग की कलादि बनाकर अभिजित् के दशा मान 2.5 वर्ष से गुणाकर अभिजित् के सम्पूर्ण क्रांति मान 253′/20′′ से भाग देने पर अभिजित् नक्षत्र दशा का भुक्त काल होगा। इस भुक्त काल में अपने पूर्ववती सभी ग्रह नक्षत्रों पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा के दशा वर्ष 2.5+2.5 = 5 वर्ष जोडने से शनि की महादशा के भुक्त वर्षादि प्राप्त होगें ।

9 राशि /8°/12′/56′′ चन्द्र का भोग राश्यादि
− 9 राशि/6°/40′/0′′ उत्तराषाढ नक्षत्र का भोग मान

शेष 0 राशि /1°/32′/56′′
= 92′/56′′

अब यहां अभिजित् के इस भुक्त कलादि को उसके वर्षमान 2.5 से गुणाकर अभिजित् के सम्पूर्ण कलादि मान 253′/20′ से भाग देने पर अभिजित् के भुक्त वर्षादि फल होगें। अतः

$$\text{अभिजित् दशा के भुक्त वर्षादि} = \frac{92'56 \times 2.5 \text{ वर्ष}}{253'/20'}$$

$$= \frac{5576 \times 2.5}{15200''} = \frac{13940}{15200}$$

अत : 13940 ÷15200 = 0 वर्ष
शेष 13940 में नियमानुसार 12 का गुणा किया तो यह हुआ
167280 ÷15200 =11 मास प्राप्त हुए पुनः शेष 80 बचा

इसमे नियमानुसार 30 से गुणा किया तो ये हुआ 2400 इसमें भाग नहीं जायेगा इसलिए शून्य बचा तो 0 दिन होगा। पुनः नियमानुसार 2400। 60 =144000 ÷ 15200 = 9 यह घटी प्राप्त हुआ। शेष बचा 7200 इसमें नियमानुसार फिर 60 से गुणा किया तो यह हुआ 432000 ÷ 15200 =28 लब्धियह पल हुआ ।

इस प्रकार भुक्त वर्षादि = 0 वर्ष, 11 मास, 0दिन, 9 घटी, 28 पल प्राप्त हुए ।

इस प्रकार गत नक्षत्रों के भुक्त वर्षादि 5/00/00/00/00 वर्ष में जोडने से शनि महादशा की भुक्त वर्षादि पांच वर्ष, ग्यारह मास, शून्य दिन, 9 घटी, 28 पल हुआ। इसको भोग्य वर्ष बनाने के लिए शनि के मूल दशा वर्ष में घटाने से भोग्य दशा वर्ष होगा।

10/00/00/00/00 शनि का मूल अष्टोत्तरी दशा वर्ष
−05/11/00/09/28 भुक्त दशा वर्ष को घटाया

04/00/29/50 /32 भोग्य वर्षादि प्राप्त हुआ ।

2.5 सारांश

अष्टोत्तरी दशावर्ष में 8 ग्रह लिए गए हैं। केतु को इसमें स्थान नहीं दिया गया है। यायग्रहों को 4–4 नक्षत्रों का एवं शुभ ग्रहों का 3–3 नक्षत्रों का अधिपति बनाया गया

है। नक्षत्रों के दशावर्ष भी क्रमशः 4 अथवा 3 से ग्रह–दशा वर्षों को भाग देने पर ज्ञात होते हैं। अभिजित् को इस दशा क्रम में स्थान दिया गया है। अभिजित् के दशा का साधन विषय है। शनि के नक्षत्र के रूप में इसकी गणना है। इसके स्पष्ट दशा–वर्ण का साधन आपने सोदाहरण इस अध्याय में पढ़ा।

2.6 शब्दावली

अष्टोत्तरी महादशा =जिस दशा में 108 वर्ष की आयु निर्धारित की गयी हो तो उसे अष्टोत्तरी महादशा कहते है ।, दशा = काल =समय = अवधि,

विशेष :– अष्टोत्तरी शनि की महादशा में चार नक्षत्र होते है, पूर्वाषाढा, उतराषाढा, अभिजित तथा श्रवण ये नक्षत्र गृहीत है।

सूर्य :– सूर्य की अष्टोत्तरी महादशा 6 वर्ष की होती है ।

चन्द्रमा :– चन्द्रमा की अष्टोत्तरी महादशा 15 वर्ष की होती है ।

मंगल :– मंगल की अष्टोत्तरी महादशा 8 वर्ष की होती है ।

बुध :– बुध की अष्टोत्तरी महादशा17 वर्ष की होती है ।

बृहस्पति :–बृहस्पति की अष्टोत्तरी महादशा 19वर्ष की होती है ।

राहु :– राहु की अष्टोत्तरी महादशा 12 वर्ष की होती है ।

शुक्र :– शुक्र की अष्टोत्तरी महादशा 21 वर्ष की होती है ।

इन सभी ग्रह दशाओं का योग करेगें तो ये 108 वर्ष जो कि सम्पूर्ण अष्टोत्तरी महा दशा का मान होगा ।

शिवादि =आर्द्रादि = आर्द्रा नक्षत्र से

2.7 बोध प्रश्न

1) अष्टोत्तरी महादशा किस स्थिति में ग्रहण करनी चाहिए इस विषय पर प्रकाश डालिए।

2) अष्टोत्तरी महादशा कितने वर्ष की होती है, तथा इसके अर्थ और भेद को स्पष्ट प्रस्तुत कीजिए।

3) आर्द्रादि अष्टोत्तरी महादशा में मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उतराफाल्गुनी जन्म नक्षत्र हो तो किस ग्रह की महादशा होगी तथा कितने वर्ष एवं मास की होगी ?

4) अष्टोत्तरी महादशा साधन कीजिए ?

5) अभिजित नक्षत्र में किस ग्रह की अष्टोत्तरी महादशा होती है इस विषय पर प्रकाश डालिए।

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) लघुपाराशरी व्याख्याकार डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वर्ष, भारतीय संस्कुति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन पो. बो. न. 1129, वाराणसी 22101 दूरभाष 2335263

2) जातक पारिजात : व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, संस्करण वर्ष 2012, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी

3) बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, टीकाकार – पं.– पद्मनाभ शर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012

4) भारतीय ज्योतिष, लेखक – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण वर्ष 200

5) भारतीय कुण्डली विज्ञान, लेखक – मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 2008, संवत् 2064

6) ज्योतिष रत्नाकर, लेखक – देवकीनन्दन सिंह, प्रकाशन वर्ष – 1934 प्रथम संस्करण, प्रकाशक :– मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY